मानव निर्माण और आर्यसमाज

डॉ. विश्वप्रभा

हिन्दी विभाग, वरिष्ठ एसोसिएट प्रोफेसर, डी.ए.वी. कॉलेज फॉर गर्ल्ज़, यमुनानगर ।

सार

मानव सृष्टि की सुन्दरतम् रचना है। मानव ही समाज, राष्ट्र एवं विश्व की सर्वांगीण ईकाई है । इस हेतु जब सृजनहार ने विश्व की रचना की तो वेद वाणी से उसका पथप्रर्दशन कर उसे सही मायनों में मानव एवं इन्सानियत का सन्देश दिया । समय–समय पर धरा को सुन्दर स्वर्ग बनाने के लिए प्रयासशील युग निर्माता, सच्चे योगी एवं ऋषि स्वामी दयानन्द जी ने मानव निर्माण को सभी निर्माणों की आधारभूमि मान आर्य समाज की स्थापना की । वे सारे भारत को कृण्वन्तों विश्वमार्यम् का सन्देश दे सारा जीवन आर्य संस्कृति के प्रचार–प्रसार करने में लगे रहे । युगदृष्टा ऋषि दयानन्द तत्कालीन समय में व्याप्त अविद्या, अज्ञान, आलस्य, पाखण्ड एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों का नाश कर समाज का उत्कर्ष चाहते थे । इसी महत्त उद्देश्य हेतु 7 अप्रैल 1875 को मुम्बई में ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की । निसन्देह इस समय ऐसे प्रकाश स्तम्भ की आवश्यकता थी जो राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक तथा भारतवासियों को राष्ट्रीय एकता के सूत्र में पिरोकर उनका मार्ग प्रशस्त कर सके। स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज के दस महत्वपूर्ण नियम दिये । यह नियम आर्य समाज की नींव हैं। ऋषि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' ग्रंथ लिखकर आर्य जाति के उन्नयन का मार्ग प्रशस्त किया । आज समय की महत्ती आवश्यकता है कि जब जनता वेद विमुख होती जा रही है तो हम आर्यवर्त की खोई हुई गरिमा को वापिस लाने के लिए कटिबद्ध हों तथा स्वार्थ और अहंकार को छोड़कर निष्काम भाव से आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार के कार्यों में तत्पर हों। आज विश्व में धर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं को सही स्वरूप कोई दे सकता है तो वह केवल आर्य समाज है ।

सूचक शब्द

अभ्युदयशील, गुम्फित, सर्वांगीण, संशोधन, स्वान्तर्यामी, संगठित, वर्णाश्रम व्यवस्था।

सुसंस्कृत एवं सुसभ्य मानव ही परमपिता परमात्मा के इस संसार रूपी वाटिका का सुन्दरतम् सौरभतम पुष्प होता है । इसी की सुवास से सारा संसार महकता है । इसीलिए जब प्रभु ने संसार की रचना की तो मानव कहीं दानव न बन जाए इस हेतु अपनी कल्याणी वाणी वेद का प्रकाश किया जिसका प्रत्येक मंत्र मानव को सही रूप में मानव बनने का सन्देश देना है। आज चारों ओर समाज निर्माण, राष्ट्र निर्माण और विश्व निर्माण का स्वर गूंज रहा है । परन्तु इन बातों का शोर करने वाले यह भूल जाते हैं कि मानव ही समाज राष्ट्र एवं विश्व की सर्वांगीण इकाई है। यदि उसका निर्माण नहीं हुआ तो समाज राष्ट्र और विश्व निर्माण का स्वर धरा का धरा रह जाएगा ।

सर्वप्रथम मानव निर्माण तद्न्नतर राष्ट्र निर्माण जैसे ज्वलन्त एवं कठिन मुद्दे पर ध्यान युग निर्माता, सच्चे योगी एवं ऋषि स्वामी दयानन्द ने दिया । उनकी दिव्य दृष्टि धूमिल अतीत, उलझे हुए वर्तमान एवं रहस्यमय भविष्य को स्पष्ट देख रही थी । मानव निर्माण को सभी निर्माणों की आधारशिला मान उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की । आर्य–समाज यानि श्रेष्ठ मानवों का निर्माण कर उन्हें संगठित कर एक श्रेष्ठ मनुष्यों का समाज बनाना । स्वामी जी ने सारे भारत को आर्य बनने की प्रेरणा दी और सिद्ध कर दिया कि आर्य संस्कृति ही विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति है।

उन्नीसवीं शताब्दी में नए तथा अभ्युदयशील भारत के निर्माण में जिन महान विभूतियों तथा संस्थाओं का योगदान रहा । उनमें महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज की स्थिति सर्वथा स्पष्ट, अग्रणी तथा सर्वमान्य है । वास्तव में ऋषि दयानन्द बहुत उच्च विचार रखते थे और उनमें एक प्रकार की आकर्षणीय शक्ति थी। वे भारत वर्ष को अविद्या, अज्ञान, आलस्य, पाखण्ड एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों के नाश एवं पतितावस्था से मुक्त करना चाहते थे । सत्य एवं पवित्रता की जागृति कर इहलोक एवं परलोक की उन्नति के लिए ऋषि दयानन्द ने वैदिक धर्म के आधार पर 7 अप्रैल 1875 के दिन मुंबई में चिरगांव मुहल्ला में डॉ. माणिक राव के घर पर आर्य समाज की स्थापना की । जब वेद, वैदिक, धर्म तथा परमात्मा को लोग भूल चुके थे यदि उस समय ऋषि दयानन्द ने हिन्दुओं की रक्षा, देश रक्षा के लिए उपदेश न दिये होते तो वैदिक धर्म लुप्त हो जाता । किन्तु ऋषि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने भारत को स्वाधीन कराने में एवं वैदिक धर्म की रक्षा के प्रति कई भारत मां के सपूत

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय तथा अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जैसे अमर शहीद हो गए । उस समय आर्य समाज जागृति ला रहा था। सच में उस समय के भारतीय दुरावस्था के अंधकार के बीच ऐसे प्रकाश स्तम्भ की आवश्यकता भी थी जो राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक तथा भारतवासियों को राष्ट्रीयता के सूत्र में गुम्फित कर उनका पथप्रदर्शन कर सके।

आर्य समाज की स्थापना के समय सर्वप्रथम मुम्बई में आर्यसमाज के 28 नियमों का निर्माण पारिख महाशय ने किया था । इन नियमों में संशोधन की आवश्यकता थी । उस समय यह आवश्यक समझा गया कि समाज की स्थापना के पूर्व समाज के नियमों का नूतन संस्कार किया जाए। इसलिए आर्य समाज के 10 नियमों को संगठित किया गया। वे नियम इस प्रकार हैः–

1. सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।
3. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है ।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए ।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए ।
6. संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।
7. सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए ।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए ।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए ।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम पालने में सब स्वतन्त्र रहे ।

इस प्रकार स्वामी जी ने लाहौर में नियमों का नूतन संस्कार करके आर्य समाज की नींव एक प्रबल चट्टान पर रख दी ।

स्वामी दयानन्द जी के कार्य जिन्हे स्थूल रूप में हम इस प्रकार देख सकते हैं।

पहले तीन नियमों में परमेश्वर और वेद के बारे में बताया गया है ।

चौथे और पाँचवें नियम में आर्यसमाज का मत स्पष्ट है ।

छटे, सप्तवें, आठवें और नवें नियम आर्यों और उनके कर्त्तव्यों के बारे में हैं तथा दसवां नियम राष्ट्रीय एवम् जातीय निर्माण संगठन से सम्बन्ध रखता है ।

आर्य समाज ईश्वर–जीव प्रकृति, उपासना का स्वरूप वेद और वैदिक साहित्य, धर्म–अधर्म, सृष्टि सर्जन, पुर्नजन्म, अवतार व मूर्ति पूजन, यज्ञ विधान, वर्ण–आश्रम व्यवस्था के सिद्धान्तों पर कार्य करता है । तभी तो ऋषि सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में दयानन्द जी कहते हैंः–

"इसलिए जो उन्नति करना चाहो तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए नही तो कुछ हाथ नहीं लगेगा क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थो से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिलकर प्रीति से करें क्योंकि जैसा आर्यसमाज आर्यवर्त्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

कहना न होगा कि यह आर्य समाज दयानन्द जी के त्याग की अमिट निशानी है । इस का इतिहास शहीदों की अमर कहानी है । ऐसे समय में जब की मतवादों की आंधियां प्रचण्ड वेग से चल रही हैं अविद्या, अज्ञान और मिथ्याज्ञान उभर रहा है, जनता वेद से विमुख होती जा रही है। हम वेदालोक को जनता तक पहुंचाने का पुनीत कार्य करें । यह आर्य समाज ही है जो पीड़ितों का सहायक है – गाय आदि पशु रक्षा, स्त्रियों की शिक्षा, विधवा विवाह, अछूतोद्धार और अनाथों की रक्षा को सदा तत्पर रहा है । यह रोगियों का डॉक्टर है – अज्ञानता, अंधविश्वास रूपी रोगों की जड़े काटता है तो यह सोते हुओं का चौकीदार बन कर अज्ञानता की घोर निद्रा में सुप्त हिन्दू जाति को उठाने वाला है । आर्यसमाज प्रारम्भ से ही स्वदेशी, सादगी, सदाचार व शाकाहार की जीवन शैली को अपनाने और भोगवाद को बढ़ाने वाली पाश्चात्य जीवन शैली से बचने–बचाने का आन्दोलन रहा है ।

आर्यसमाज की स्थापना के समय ऋषि दयानन्द जी ने स्पष्ट कहा था कि मैंने कोई नया पन्थ चलाकर गुरू, गद्दी या मठ की स्थापना नहीं की बल्कि लोगों को इन धर्मों के ठेकेदारों और मठाधीशों के चंगुल से आजाद करने के लिए आर्यसमाज की स्थापना की है । इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने लोगों में वैचारिक चेतना जगाने का प्रचार कार्य किया और समाज में क्रांति का मंत्र फूंक दिया । ऋषि दयानन्द एक मुक्त आत्मा थे जिनको परमात्मा ने संसार के उपकार के लिए ही भेजा था । राष्ट्रीय एकता और अखण्डता का प्रचार आर्यसमाज के जन्म काल से ऋषि दयानन्द ने किया । महर्षि दयानन्द जी आर्यवर्त को उसकी खोई हुई गरिमा वापिस दिलाने के लिए कटिबद्ध थे तथा उनके हृदय में राष्ट्र को समुन्नत देखने की असीम वेदना थी ।

निष्कर्ष :–

अन्ततः कहा जा सकता है कि आज विश्व में देश, धर्म, संस्कृति एवं परम्पराओं को सही स्वरूप कोई दे सकता है तो वह केवल आर्य समाज ही है। आज संगठन पहले जैसा नहीं रहा। किन्तु विडम्बना है कि आज आर्य कहलाने वाला आर्यवर्त्त अपने उद्देश्य तथा कर्तव्य से भटक गया है। जबकि सत्य यह है कि आज वर्तमान वयोवृद्ध अधिकारियों को आर्यसमाजी संस्थाओं की पतवार आगे थमाने के लिए अपेक्षाकृत, अपने से अधिक युवा सुयोग्य, प्रशासन कुशल तथा पद लोलुपता एवं परिवारवाद से मुक्त सेवाभावी एवम् निष्ठावान स्वयंसेवकों की महत्ती आवश्यकता है, ताकि समय रहते वर्तमान अधिकारी इन्हें कुशल संचालन का प्रशिक्षण देकर भावी जिम्मेदारी सौंप सकें । यह सौ प्रतिशत सत्य है कि आर्यसमाज का प्रचार करने से ही कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उद्घोष साकार हो सकता है । आज समय की सबसे बड़ी चुनौती है–आर्य समाज की विचारधारा, आदर्श, सिद्धान्त एवं अस्तित्व की रक्षा करना । इन उद्देश्यों की पूर्ति हम उस समय ही कर सकेंगें जब मिल–बैठकर महर्षि की भावना को हृदय में रखकर अपने स्वार्थ एवं अहंकार को छोड़कर निष्काम भाव से आर्यसमाज के प्रचार–प्रसार में संलग्न हो जाएगें। यद्यपि आज लगभग 6000 आर्यसमाजों की स्थापना हो चुकी है फिर भी अंधविश्वास और पाखण्ड, भ्रष्टाचार, हिंसा, जातिप्रथा आदि निरन्तर बढ़ रहे हैं। आज के युग में आवश्यकता है कि आर्य स्वयं निरीक्षण करें और लगन पूर्वक ऋषि दयानन्द द्वारा दिखाए मार्ग पर चलने के लिए एकजुट हो जाए । यही ऐसा आन्दोलन है जिसके जरिये सम्पूर्ण जगत में सुख शान्ति का साम्राज्य स्थापित किया जा सकता है और तभी हमारे प्यारे ऋषि दयानन्द का सुख स्वप्न साकार होगा ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कपूर धर्मपाल, महर्षि दयानन्द, श्री धर्मपाल कपूर प्रकाशन, यू.आर,वी प्रिंटिंग प्रैस, पंचकूला ।
2. स्वामी अनुभवानन्द 'शान्त', आर्य समाज का सैद्धान्तिक परिचय–लेखक श्री स्वामी अनुभवानन्द 'शांत' सम्पादक ओमप्रकाश आर्य, प्रेमनगर करनाल ।
3. पं. महेन्द्र पाल, मस्जिद से मनोव्यथा इमाम पं. महेन्द्र पाल इमाम बड़ी मस्जिद अरवाला, जिला बागपत, उत्तरप्रदेश ।
4. आर्यजगत – महात्मा हंसराज दिवस विशेषांक आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा ।
5. मधुर लोक, दिसम्बर 2004, मधुर लोक कार्यालय गली, आर्यसमाज, बाजार सीताराम ।
6. मधुर लोक, मई 2006, मधुर लोक कार्यालय गली, आर्यसमाज, बाजार सीताराम ।